Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity
ISSN: 2279-0233
Continuous issue-22 | January – March 2016

ऋग्वेद में अश्विनीकुमारों की आयुर्वेदीय चिकित्सा

प्राचीन संस्कृत साहित्य में आधुनिक प्राणीविज्ञान की अणुजैविकविद्या संबधित प्रत्यारोपण एवं अंगो का जुड़ान, शल्यचिकित्सा, वृध्ध को युवान बनाना इत्यादि अनेक विषयों ऋग्वेद में प्राप्त होते है | प्रस्तुत लेख में निरुपित ऋग्वेद के आख्यानों एवं पात्रों को देखते हुए आधुनिक विद्वानों के लिए प्रेरणास्रोत बन रहे है |

त्वष्टाने अपनी कन्या संज्ञा का विवाह भगवान भास्कर से किया था | संज्ञा का अर्थ होता है सम्यक् ज्ञानवाली | संज्ञामें अपने नाम के अनुरूप ही सम्यक् ज्ञान का गुण विद्यमान था | वह अपने पतिकी सेवामें निरंतर लगी रहती थी; क्योंकि पत्नीके लिये यही सम्यक् ज्ञान है | इस सेवा में भगवान् भास्कर का प्रचण्ड तेज उसे विघ्न पहुँचाता था, क्योंकि भगवान् का वह प्रचण्ड तेज उसे सहन नहीं हो पाता था | वह उस तेज को जी कड़ा करके सहा करती और पति को यह नहीं समझने देती थी की उसने उसको कोई कष्ट हो रहा है | वह सोचती थी कि धीरे-धीरे सहनशक्ति आ जायगी | किंतु मनु, यम और यमुना- इन संतानोंके हो जानेके बाद भी पतिका तेज उसके लिये असह्य रहा | उसने तपस्याकी शरण ली | किंतु पतिकी सेवा छोड़कर पत्नीके लिये तपस्या करना भी धर्म नहीं माना जाता | इसलिये उसने एक उपाय निकाला | उसने अपनी छायाको पतिकी सेवाके लिये नियुक्त कर दिया और स्वयं अपने सतित्वकी सुरक्षाके लिये वह अश्वाका रूप धारण करके उत्तरकुरु में तपस्या करने लगी |

जब भगवान् सूर्यको इस रहस्यका पता चला, तब वे अपनी पत्नी के प्रति दयार्द्र हो गये और अश्वरूप धारणकर उससे मिले | इस प्रकार संज्ञासे जुड़वाँ संतानें उत्पन्न हुईं, इसमें एकका नाम दस्त्र और दूसरेका नासत्य है | माताके नाम पर इनका संयुक्त नाम अश्विनीकुमार है |[१]

ऋग्वेद में इनका सौन्दर्य बहुत आकर्षक है | इनके देह से सुनहरी ज्योति छिटकती रहती है | ये दोनों देवता जितने सुंदर है, उतने ही सुन्दर उनके पावन कर्म है | स्मरण करते ही वह उपासकों के पास पहुँच जाते है और उनके संकट को तुरंत दूर कर देते है |

शयु नामक एक ऋषि थे | इनकी गाय वन्ध्या थी, अश्विनीकुमारोंने गाय के थनों को इतना सशक्त कर दिया कि उनसे दूधकी धारा बहने लगी |[२]

दुर्दान्त असुरों ने रेभ नाभक ऋषिके हाथ-पैर बाँधकर उन्हें जलमें डूबा दिया था | अश्विनीकुमारोंने उनको बाल-बाल बचा लिया | असुरोंने यही दुर्गति वंदन ऋषिकी भी की | अश्विनीकुमारोंने उन्हें भी शीघ्र ही बचा लिया |[३]

देवताओं ने इन दयालु अश्विनीकुमारों के ऊपर चिकित्सा का पूरा भार सोंप रखा था | 'अथ भूतदयां प्रति' यह आयुर्वेदका सिध्दांत इनके जीवनमें स्वभाव बनकर उतरा हुआ था | ये हर प्राणीको ढूंढ-ढूंढकर उसकी मानसिक और शारीरिक बाधा दूर किया करते थे |

१. शल्य-कर्म

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल मे दीर्घतमाका कटा सिर जोड़ा गया एसा प्रंसंग है | दीर्घतमा सूक्तद्रष्टा ऋषि थे | ये ममता के पुत्र थे | एक तो ये जन्मान्ध थे, दूसरे जर्जर वृध्द हो चुके थे | दास लोग इनकी सेवा करते-करते ऊब चुके थे | वे चाहते थे कि इनका शरीर न रहे तो हमें छुटकारा मिल जाय | सभीने मिलकर असहाय दिर्घतमाको आगमें झोंक दिया | ऋषिने अश्विनीकुमारोंको स्मरण किया | इन दोनों देववैद्योंने ऋषिको बाल-बाल बचा लिया | जलनेका शरीर पर और मन पर कोई ख़राब असर न पड़ने दिया | दास तो इनको मारने पर तुले ही थे | अवसर मिलते ही उन लोगोंने ऋषिके हाथ-पैर बाँधकर अथाह जलमें डाल दिया | ऋषिने पुनः अश्विनीकुमारों की शरण ली | इस बार भी उनका बाल बाँका न हुआ | दास बहुत उद्विग्न हुए | त्रेतत तो आपसे बाहर हो गया और उसने तलावारका ऐसा हाथ जमाया कि सर कटकर दूर छिटक गया | ऋषिको इस क्रियाकी सुगबुगाहट मिल गयी थी, इसलिये उन्होंने तुरंत अश्विनीकुमारों को याद करना शुरू कर दिया था | परिणाम यह हुआ कि दयालु अश्विनीकुमार आये और दूर पड़े हुए सिरको जोड़कर उन्हें भला-चंगा बना दिया|[४]

(अ) शरीरके तीन कटे टुकड़ोको जोड़ना

शत्रुओंने श्याव ऋषिके शरीरको काटकर तीन टुकड़े कर दिये थे | अश्विनीकुमारोंने तीनों टुकड़ोको जोड़कर उन्हें पुनर्जीवित कर दिया | अगत्स्य के द्वारा प्रार्थना करते हुए विश्वपला के कटे जाँघ को अच्छा किया |[५]

(ब) कटी जाँघके स्थान पर लोहेकी जाँघ लगाना

खेल नामक एक सुयोग्य राजा थे | अगस्त्यजी उनके पुरोहित थे | उनकी पत्नी विश्पला थी | वह युध्ध में कुशल थी, संग्राममें जाया करती थी, एक दिन युध्ध में शत्रुओंने उसकी एक जाँघ काटकर अलग कर दी | अगस्त्यजी ने अश्विनीकुमारों की स्तुति की | अश्विनीकुमार आ गये और विश्पला को लोहे की जाँघ लगा दी तथा तुरंत ही इस योग्य बना दिया की वह चलने-फिरने लगी और छिपे हुए धन को दूसरी जगह ले गयी |[६]

प्राचीन काल से स्तुति किये हुए शंयु के लिए गाय को दुधारु बनाकर तितर को वरु के मुखमें से मुक्त कराकर एवं विश्पला के टूटे हुए जाँघ के स्थान पर उचित प्रक्रिया (शस्त्रक्रिया) से लोहेकी जाँघ लगा दी |[७]

(२) वृध्धसे युवा बनाना

(अ) च्यवन ऋषिको यौवन प्रदान

अश्विनीकुमारोंने पहले तो च्यवन ऋषिको जलमे उतारा | थोड़ी देर बाद वे स्वयं भी उसी जल में प्रवेश कर गये | एक मुहूर्त तक जलके अंदर अश्विनी- कुमारों ने च्यवन की चिकित्सा की और औषध-प्रयोग के द्वारा ही बूढ़े च्यवन ऋषिको युवा बनाया था |[८]

(ख) वंदन ऋषि को यौवन प्रदान

वंदन ऋषि अश्विनीकुमारों पर बहुत भरोसा रखते थे | उनकी कारुणिकता पर उन्हें गहरा विश्वास था और वे प्रतिदिन अश्विनीकुमारोंकी स्तुति किया करते थे | बहुत भरोसा रखते थे | अश्विनीकुमारों पर श्रध्दाके साथ-साथ इनकी उम्र भी बढ़ती चली गयी | बुढ़ापा आ गया | धीरे-धीरे बुढ़ापे का असर इनके अंग-प्रत्यंग लक्षित होने लगा | चलना-फिरना कठिन होने लगा | तब इन्होंने अश्विनीकुमारों से प्रार्थना की कि वे इनके बुढ़ापेको हटा दें | परम दयालु अश्विनीकुमारोंने इनकी प्रार्थना सुन ली और शीघ्र ही इनके पास आ गये | फिर उन्होंने इनके शरीर के शिथिल अङ्गो को वैसे ही नया बना दिया जैसे कोई शिल्पी किसी पुराने रथको उसके अवयवोंको इधर-उधर घटा-बढ़ाकर नया बना देते है |[९]

अश्विनीकुमार अत्यंत दयालु है | उन्होंने नवयौवन तो प्रदान किया ही साथ ही इनकी याचानासे भी आगे बढ़कर उन्होंने इनकी आयुको भी बढ़ा दिया | अश्विनीकुमारोंकी कृपामयी दृष्टिसे इनके जीवनमें जो भी विध्न आते थे | उसे वे टालते जाते थे | एकबार वन्दन ऋषि कुँएमें गिर गये | अश्विनीद्वयने इनको कुँएसे भी बाहर निकाल दिया | कुँएमें गिर जानसे इनकी पत्नी बहुत रो-धो रही थी,उन्हें भी आश्वस्त कर दिया |[१०]

(ग) श्याव ऋषिका कुष्ठ हटाकर उन्हें जवान बनाया |

श्याव ऋषिके कुष्ठको भी अश्विनीकुमारोंने ठीक कर दिया था और उन्हें इस योग्य बना दिया की वे विवाह भी कर सके | विवाह करा भी दिया | श्याव ऋषिके एक ओरके अंग-प्रत्यंग कुष्ठरोगसे गल गये, अश्विनीकुमारोंने उन्हें भी शीघ्र ही भला- चंगा कर दिया |[११]

(घ) अन्धोंको आँखे दीं

एक बार उपमन्युने आक के पत्ते खाये, पत्तोंने पेटके अंदर जवाला उठा दी | जिससे आँखोंकी ज्योति नष्ट हो गयी, बेचारा अंधा हो गया | अंधा होने के कारण कुँएमें गिर पड़ा | जब शामको उपमन्यु अपने गुरु आयोद धौम्य के पास नहीं पहुँचा, तब उपाध्याय उसे खोजने के लिये स्वयं जंगलमें चले गये और आवाज लगायी - 'उपमन्यु ! कहाँ हो ? चले आओ |' उपमन्युने कुँएमें से ही आवाज लगायी - 'गुरूजी ! मैं कुँएमें गिर पड़ा हूँ | निकल नहीं सकता |' जब उपाध्याय को पता चला कि आकके पत्ते खानेसे इसकी आँखें ख़राब हो गयी है | तब उन्होंने उपमन्यु से कहा -'बेटा ! अश्विनीकुमार देवताओं के वैद्य हैं, तुम उनकी स्तुति करो, वे तुम्हारी आँखें ठीक कर देंगे |' उपमन्युने गुरुकी आज्ञा पाकर अश्विनीकुमारों की ऋग्वेदके मंत्रों द्वारा स्तुति प्रारंभ की |दयालु अश्विनी कुमार रमणीय स्तुति सुनकर झट वहाँ आ गये और प्यार भरे शब्दों में बोले- 'उपमन्यो ! यह पुआ हैं, इसे खा लो |' उपमन्युने नम्रता से कहा- 'भगवन् ! मैं बह्मचारी हूँ | बिना गुरुके निवेदन किये- आयुर्वेदने शिष्योंको आदेश दिया तुम पहले गुरुको अर्पण करो, उसके बाद उसका उपयोग करो | पूर्वं गुर्वर्थोपाहरणे यथाशक्ति प्रयतितव्यम् ||[१२] इस पुएको नहीं खा सकता हूँ | अश्विनीकुमारोंने कहा - 'एसा ही करो | तुम्हारी इस गुरुभक्ति से हम प्रसन्न हैं, इससे तुम्हारी आँखें तो ठीक हो ही जायँगी | इतना ही नहीं, तुम्हारी बुध्धि में सम्पूर्ण वेद तथा सभी धर्मशास्त्र स्वत: स्फुरित हो जायँगे |'[१३]

इसी प्रकार ऋजाश्वके दोनों नेत्र नष्ट हो गये थे | वे कुछ भी देख नहीं पाते थे,चिकित्सा के द्वारा अश्विनीकुमारों ने ऋजाश्वकी आँखें भी ठीक कर दीं |[१४]

असुरोंने कण्व ऋषिकी आँखोंको आगसे झुलसा दिया था | वे कुछ भी नहीं देख पाते थे | अश्विनीकुमारोंने उनकी भी आंखें ठीक कर दीं |[१५]

ऋजाश्व भी आँखोंके न रहने से चल-फिर नहीं सकते थे | अश्विनी कुमारोंने उन्हें आँखें दीं |[१६]

वध्रिमती नाम की एक सती महिला थी, पुत्रके बहुत दु:खी रहती थी, उसने भी अश्विनीकुमारों की शरण ली | दोनों वैद्योंने उसे 'हिरण्यहस्त' नामक बहुत सुन्दर और योग्य पुत्र प्रदान किया ।[१७]

इस प्रकार वेद और पुराणने अश्विनीकुमारों की प्राणियों पर दया करनेवाले दक्ष वैद्य के रूप में हमारे सामने उपस्थित किया है | अन्त में उनकी प्रशंसा में कहा है - 'हे अश्विनीकुमारों ! रोगग्रस्त पुरुषको जिसके अंग-प्रत्यंग को जोड़कर पहले-जैसा ठीक बना देते हैं |'

अत्रिके अपत्य पौर ऋषिके शब्दोंमें - 'हे अश्विनीकुमारों ! हमारे पिता अत्रि असुरों द्वारा अग्निमें झोंक दिये गये थे, तब आपके स्तवनसे उन्हें कोई ताप नहीं हुआ था|[१८]

ऋषिने पुनः कहा - हे अश्विनीकुमारो ! पुरातत्त्व के जाननेवाले विद्वान् जो आपको 'सुखदाता' कहते हैं, वह निश्चय ही सत्य है |[१९]

दक्ष प्रजापति से अश्विनीकुमारोंने आयुर्वेद का पूर्ण अध्ययन किया था | वायुपुराण कहता है की 'अश्विनीकुमारोंने क्षीर-सागर स्थित 'चन्द्रपर्वत' पर उत्तम प्रकार की औषधियाँ उत्पन्न करने का तथा यथासमय में उनका उपयोग करने का शुभ कार्य किया था |' पुराणों में वह कथा प्रसिध्ध है की जिसमें वयोवृद्ध च्यवन ऋषिको अश्विनीकुमारों ने अपनी अद्भुत आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा 'तारुण्य' प्राप्त करवा दिया था | अश्विनीकुमारों का वह आयुर्वेद ग्रन्थ इस समय उपलब्ध नहीं है, किन्तु 'अश्विनीसंहिता', 'चिकित्सा-सार-तन्त्र', 'अश्विनीकुमार संहिता', इत्यादि ग्रन्थोंका उल्लेख अन्य ग्रन्थोंमें मिलता है |

ऋग्वेद में भिन्न-भिन्न शल्यचिकित्सा पद्धतियों का विविध प्रकार से वर्णन किया है जबकि शरीर के तीन कटे टुकड़ोको जोड़ना, कटी जाँघके स्थान पर लोहेकी जाँघ लगाना, च्यवन ऋषि एवं वंदन ऋषि को यौवन प्रदान करना, श्याव ऋषिका कुष्ठ हटाकर उन्हें युवान बनाया, अन्धों को आँखें देना इत्यादि वैदिक पद्धतियों का प्रभाव आज भी वैज्ञानिकों को दिखने मिलाता है तथा यह पद्धतियों आज भी विज्ञान के लिए उपादेय एवं प्रेरक बन सकती है, ऐसा दृढ़ भाव से कह सकते है |

पादटीप

१. महाभारत, व्यास, संपा. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, पारडी, सं. १९७८, अनु. पर्व.१५०-/१७-१८

२. युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमृतस्य मज्मना |
याभिर्धेनुमस्वं१ पिन्वथो नरा ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ||
ऋग्वेदसंहिता, सरल गुजराती भावार्थ सहित, संपा. वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य माता भगवती देवी शर्मा, प्रका. ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, हरिद्वार, तृतीय आवृत्ति-२०००,१/११२/३

३. याभी रेभं निवृतं सितमद्भय उद्वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे |
याभी: कण्वं प्र सिषासन्तमावतं ताभिरु षु ऊतिभिरश्विना गतम् | वही, १/११२/५

४. न मा गरन्नद्यो मातृतमा दासा यदीं सुसमुब्धमवाधु: |
शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत्स्वयं दास उरो अंसावापि ग्ध || वही, १/१५८/५

५. युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं मह: क्षोणस्याश्विना कण्वाय |
प्रवाच्यं तद्वृषणा कृतं वा यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् || वही, १/११७/८

६. चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम् || वही, १/११६/१५

७. युवं धेनुं शयवे नाधितायापिन्वतमश्विना पूर्व्याय |
अमुच्यतं वर्तिकामंहसो नि: प्रति जड़घां विश्पलाया अधत्तम् || वही, १/११८/८
८. युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः |
युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत || वही, १/११७/१३
९. युवं वंदनं निर्ऋतं जरण्यया रथं न दस्त्रा करणा समिन्वथ: |
क्षेत्रादा विप्रं जनथो विपन्यया प्र वामत्र विधते दंसना भुवत् || वही, १/११९/७
१०. तद्वां नरा शंस्यं राध्यं चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम् |
यद्विद्वांसा निधिमिवापगूळहमुद्दर्शतादूपथुर्वन्दनाय || वही, १/११६/११
११. हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वध्रिमत्या अदत्तम् |
त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तमुज्जीवस एरयतं सुदानू || वही, १/११७/२४
१२. चरकसंहिता, भाग-२, व्या. वैद्य दयाल परमार, प्रका. सरस्वती पुस्तक
भण्डार, अमदावाद-१, अद्यतन आवृत्ति-२०११-१२, वि. ८/१३
१३. महाभारत, व्यास, संपा. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, पारडी, सं. १९७८, आदि. अ. ३
१४. शतं मेषान्वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार |
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्त्रा भिषजावनर्वन || वही, १/११६/१६
१५. युवमत्रयेडवनीताय तप्तमुर्जमोमानमश्विनावधत्तम् ||
युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुषाणा || वही, १/११८/७
१६. शतं मेषान्वृक्ये मामहानं तम: प्रणीतमशिवेन पित्रा |
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधतं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे || वही, १/११८/१७
१७. हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वध्रिमत्या अदत्तम् |
त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तमुज्जीवस एरयतं सुदानू || वही, १/११७/२४
१८. वही, ५/७३/६
१९. वही, ५/ ७३/९

****

प्रा. डॉ. बलाभाई एस. रबारी
संस्कृतविभाग, श्री टी. ए. चतवानी आर्ट्स & श्री जे.वी. गोकल कोमर्स कोलेज,
राधनपुर,जि.पाटण, -३८५३४०

Copyright © 2012- 2016 KCG. All Rights Reserved. | Powered By : Knowledge Consortium of Gujarat